

## रंगक्षुब्ध शान्ति

सबसे पहले रंग और सब कुछ के बाद बचे हुए रंग। रंगों का घमासान, विकल दारुणता, उनकी आर्द्रता, उनकी मैत्री, उनका एक-दूसरे से दूर हटना, एक-दूसरे को बुलाना — संक्षेप में, रंगों के होने का पूरा नाटक रजा के चित्रों में है। यों तो चित्र में रंग होंगे ही, पर यहाँ रंगों की प्राथमिकता है। उनके चित्र सबसे पहले रंग हैं, उनमें आकार हैं, रेखाएँ और बिन्दु हैं, पर उन्हें देखने के बाद उन्हें याद करना रंगों को, उनकी मोहक दृढ़ता को याद करना है। रजा के चित्र रंगकृतियाँ हैं और रंग स्मृतियाँ भी। एक कवि के शब्दों में, उनके यहाँ 'रंग बोलते हैं।' पर उनकी बोली में सब तरह की जटिलताओं से निपट चुकने के बाद आनेवाली सादगी है और पारदर्शिता भी। वे बोलते हैं पर बड़बोले नहीं हैं — उनमें "कठिन प्रकार में बँधी सत्य सरलता" है। वे आप पर हावी होते हैं, लेकिन अपने को थोपकर नहीं। उनमें प्रार्थना की पवित्रता और चीख का सा आवेग है।

रजा दृश्यालेख में अब प्रकृति के चित्रकार हो गये हैं। दृश्य जैसे पीछे खिसकता है और कई बार तो कई परतों के बीच कहीं गिला ही गया है — जो बची है, सहज और शान्त, सारे क्षोभ से निकलकर, वह है दृष्टि, जो दृश्यालेख को अतिक्रमिता करती है; जो एक ऐसा लोक रचती-उकेरती है जिसमें चातुष्य अनुभव के तत्त्व मनुष्य के लिए बुनियादी चिन्ता और उत्सुकता में बदल चुके हैं। बिना प्रचलित रूपाधि-प्रायों का सहारा लिये और बिना किसी तरह का दिखाऊ शोरगुल मचाये रजा के चित्रों में शिल्प के प्रश्न अन्तरात्मा के प्रश्न बन गये हैं: व्यक्तिबंध के शब्दों में कहें तो उनमें 'आत्मा का संक्षिप्त आयतन' है। लेकिन तुरंत यह भी कहना जरूरी है कि रजा की रंगाकुलता प्रश्नाकुलता नहीं है। ये चित्र तेजी से प्रश्न नहीं पूछते और न ही चटपट कोई उत्तर देते हैं। प्रश्न और उत्तर के बीच जो एक बेचैन अन्तराल होता है उसमें जैसे वे निलम्बित हैं।

रजा का दूसरा आग्रह भी स्पष्ट है। वह है: बिन्दु और उसकी अनन्त सम्भावनाएँ। यह कहना सही नहीं होगा कि यह उनके ताजा दौर का केन्द्रीय सरोकार है। उन्हें मध्यप्रदेश में अपने बचपन — एक देहात स्कूल में एक पण्डितजी ने सबसे पहले बिन्दु पर अपने को वेन्दित करने की सलाह दी थी। बिन्दु और अनेक ज्यामितीय आकार कुछ चित्रों में हैं — पर कहीं भी बिन्दु निरीह इकाई नहीं है: वह हर बार एक ऐसे प्रसंग में है जहाँ वह शक्ति का, आकर्षण का केन्द्र है। अक्सर तो वह सूर्य ही है। रंग और आकार उससे फूटते या उसे घेरते हैं, पर वह स्पष्ट और स्वतन्त्र रहता है, लगभग अपराजेय। बहुत सारी आधुनिक कला निराशा और अवसान की कला रही है। रजा में एक आधुनिक का खुलापन, कौशल और ताजगी, सभी हैं, पर वे अपनी लगभग प्रागैतिहासिक स्मृतियों में आधुनिकता की ऐतिहासिक निराशा से अपने को मुक्त कर लेते हैं। वे सारे आधुनिक क्षोभ से गुजरकर और शायद आशा-निराशा को छोड़कर ऐसी शान्ति की ओर बढ़ रहे हैं जो न तो जड़ है और न किसी तरह का पलायन ही। खूब जूझने के बाद वह एक ऐसा बिन्दु है जहाँ से चीजें साफ़ दिखायी देती हैं — एक सरल पारदर्शिता में और सारी अप्रासंगिकताओं के झाड़-झंखाड़ों के हट जाने के बाद। वह न विराम है, न थकान: वह बुनियादी चीजों के लिए संघर्ष की पूरी तैयारी का निर्णायक क्षण है। वह अपने संघर्ष, अपने औजार और अपनी शक्ति को ठीक-ठीक तौल पाना है। वह एक कलाकार की अपनी पूर्णता पाने की छटपटाहट और आत्मविश्वास दोनों का एक साथ सम्भावना-समृद्ध होना है।

HINDI

To be accompanied  
in the same type  
& imposition  
as other text  
in Hindi -